

धीरे धीरे आ रे बादल धीरे धीरे आ ।
मेरी स्वामिनि सो रही है शोरु गुलु न मचा ॥

मेरी श्यामा सो रही है बन्दि कर पांखे—बन्दि....
नींद में डूबी हुई हैं रस भरी आंखे—रस....
जा तुझे मेरी कसम मेरी कसम है जा ॥१॥

श्यामा प्यारी करि रही है स्वपन में बातें—स्वपन....
फूल वर्षा करि रही हैं चांदनी रातें—चांदनी
भा रही है मधुर मूरति मधुर मूरति भा ॥२॥

मेरी प्यारी की छबीली माधुरी मन भाइ—माधुरी
मुश्कण में मेरी प्राण सुधा को वर्षाई—सुधा
गा प्रिया की माधुरी को माधुरी को गा ॥३॥

मेरी प्यारी जब विपिन में खग मृगों से खेलती—खग
रूप की प्रभा चंहू दिशि चांदनी सी फैलती—चांदनी
छा रही है छटा सुख की छटा सुख की छा ॥४॥